शोध समाचार

ड्रीम ट्रायल

एक सामान्य व स्वस्थ्य व्यक्ति के खून के सीरम में खाली पेट अवस्था में (Fasting Serum Glucose) ग्लूकोज़ की मात्रा 110 मि.ग्रा. प्रति डेसीलिटर के बराबर या कम रहती है। परंतु किसी को डॉयबेटिक/मधुमेही कहने के लिये इस मात्रा का 126 या उससे अधिक होना परिभाषित किया गया है। आप सोच रहे होंगे यदि यह 110 से 126 के बीच है तब क्या कहेंगे और ऐसे व्यक्ति का भविष्य क्या होगा। उस अवस्था को इम्पेअर्ड फास्टिंग ग्लूकोज़ (Impaired Fasting Glucose या IFG) का नाम दिया गया है। इन व्यक्तियों को भविष्य में डॉयबिटीज़ होने व हृदय रोग होने का बड़ा खतरा रहता है। इसे डायबिटीज के पूर्व की पायदान माना जाता है।

इसी प्रकार यदि एक स्वस्थ्य व्यक्ति को खाली पेट अवस्था में 75 ग्राम ग्लूकोज मुँह से दें और ठीक दो घंटे बाद उसका सीरम ग्लूकोज़ देखें तो यह 140 के नीचे आना चाहिये। परंतु किसी को डायबिटीज़/मधुमेह का मरीज़ कहने के लिये यह 200 या अधिक होना चाहिये। जिन व्यक्तियों में यह 140 से 200 के बीच है उन्हें इम्पेअर्ड ग्लूकोज़ टॉलरेन्स (Impaired Glucose Tolerance या IGT) से पीड़ित कहते हैं। यह भी मधुमेह के पहले की पायदान है और आगे चलकर मधुमेह या हृदय रोग होने का बड़ा खतरा इनके साथ भी रहता है।

दोनों IFG और IGT से मरीज़ मधुमेह में प्रवेश न करें और उन्हें हृदय रोग न हो इस उद्देश्य को लेकर एक बहु–राष्ट्रीय डबल ब्लाइंड शोध ड्रीम ट्रायल के नाम से किया जा रहा था। सितम्बर 15, 2006 को यूरोपियन डॉयबिटीज़ अध्ययन संघ के कोपेन हेगन (डेनमार्क) वार्षिक सम्मेलन में इस ट्रायल के परिणाम डॉ. सलीम यूसुफ ने पढ़े। इस ट्रायल में रेमीप्रिल और रोजीग्लिटाज़ोन नामक दवाईयों का उपयोग किया गया था। रेमीप्रिल समूह में डॉयबिटीज़ के होने या हृदय रोग होने पर विशेष प्रभाव नहीं देखा गया। रोजीग्लिटाजोन लेने वाले समूह में डॉयबिटीज 60 प्रतिशत कम लोगों को हुआ और हृदय रोग की संभावना में भी महत्वपूर्ण कमी दर्ज की गई। इससे पहले इसी प्रकार के शोध मेटफारमिन और ऐकार्बोज़ नामक दवाईयों के लिये भी हो चुके हैं। वैज्ञानिकों का मानना है कि मधुमेह पूर्व की पायदान (Pre-Diabetes) पर ही यदि इस बिमारी को हम रोक सकें तो मरीजों को इसके गम्भीर विकारों से बचाया जा सकेगा।

डायबिटीज़ और टी.बी.

मेडिकल शोध पत्रिका ''क्लिनिकल इंफेक्शीयस डिसीज़'' (Clinical Infectious Diseases) के अक्टूबर 2006 अंक में एक महत्वपूर्ण शोध–पत्र प्रकाशित हुआ है। नीदरलैंड के डॉ. वॉन क्रिवेल ने टी.बी. के मरीजों को दो समूहों में बाँटा। एक जिन्हें डायबिटीज़ थी व दूसरा जिन्हें डायबिटीज़ नहीं थी। दोनों समूहों के मरीजों को टी.बी. की दवाई रिफेम्पीसिन (Rifampicin) समान डोज़ में खाने को दी गई। कुछ दिनों बाद दोनों समूहों के सभी मरीजों के खून में Rifampicin की मात्रा (level) की जाँच की गई। शोध में पाया गया कि डॉयबिटीज़ के मरीजों में खून में Rifampicin की मात्रा और गैर–डॉयबिटीज़ मरीज़ों में लगभग 50 प्र. कम है। अक्सर देखा जाता है कि डायबिटीज़ में टी.बी. रोग की संभावना बहुत अधिक रहती है। टी.बी. होने पर डायबिटीज़ में इलाज कठिन रहता है और टी.बी. की दवाईयाँ सामान्य से ज्यादा समय तक लेनी होती हैं। डायबिटीज़ में टी.बी. की दवाईयों से रेजिस्टेंस भी ज्यादा होती है। समझा जाता है कि खून में शुगर ज्यादा होने से टी.बी. की दवाईयाँ बेअसर हो जाती हैं। इस शोध में बताया गया है कि खून में टी.बी. की दवाई की मात्रा कम हो जाती है।

सेंसरयुक्त इंसुलिन पम्प

इंसुलिन पम्प बनाने वाली कम्पनी मिनीमेड ने पहली बार एक ऐसा इंसुलिन पम्प बनाया है जिसमें लगातार शरीर में ग्लूकोज़ की मात्रा बताने वाला सेंसर भी जोड़ा गया है। इसका नाम Minimed Real Time Insulin Pump and Continuous glucose monitoring system है। अमरीकी

क्रिस जारविस टाईप–1 डायबिटिक, कैनेडियन नौकायान टीम के सदस्य नये **इन्सुलिन पम्प** के साथ